Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

अनुसंधान की वैज्ञानिक विधियाँ

Bandana Mishra*

[1] Research Scholar, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore, Madhya Pradesh

सार – आधुनिक युग मई विज्ञान की प्रगति के साथ हमारे जीवन मई अनुसंधान का विशेष महत्व है क्योकि अनुसंधान का प्रयोग अब ज्ञान की प्रत्यक शाखा के गहन अध्यन के लिए होने लगा है| शिक्षा तथा के छेत्र मई अनुसंधान का अत्यधिक महत्व है अनुसंधान की प्रक्रति क्या है| शोध और गवेषणा शोध शब्द से एक प्रकार की शुद्धि या संशोधन का बोध होता है| इस संदर्भ मै हम कह सकते है की प्रदत्तों के विश्लेषण सरणियाँ और स्पस्टिकरण के लिए शोध शब्द का प्रयोग तो कर सकते है किन्तु इस माध्यम से व्यापक निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते है|

----------X----------

अनुसंधान द्वारा उन मोलिक प्रश्नो के उत्तर देने का प्रयास किया जाता हैजिसका उत्तर अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है| किन्तु हर प्रश्न का उत्तर मनुष्य के प्रयासो पर निर्भर करता है| इस प्रत्तयको इस उदाहरण से स्पस्ट कर सकते है कुछ वर्ष पहले जब मनुष्य चंद्रमा पर नहीं पाहुचा था वास्तव मै उसे इस बात की जानकारी नहीं थी की चंद्रमा क्या है? यह एक समस्या थी जिसका कोई समाधान नहीं था | परंतु वह अपने प्रयास से चंद्रमा पर पाहुचा, वह से मिट्टी उठा कर लाया तथा उसके विश्लेषण से ज्ञान हो सका की चंद्रमा क्या है| इस प्रकार शोध कार्यो द्वारा उन प्रश्नो का उत्तर खोजने का प्रयास किया जतज है जिंका उत्तर साहित्य मै उपलब्ध नहीं है और न ही मनुष्य की जानकारी मै है|

वास्तव मै अनुसंधान शब्द एक प्रक्रिया है जिसमे शोध तथा गवेषणा की उपक्रियाए भी सम्मिलित है जिसमे अनेक प्रकार के तथ्यो का एकत्रीकरण तथा उनके विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है | अनुसंधान शब्द मै प्रक्रति के अनुसार पूछताछ, जांच, गहन निरीक्षण व्यापक परीक्षण, योजनबद्ध अध्ययन सौददेश एवं तत्पर्तयुक्त सामान्य निर्धारण आदि प्रक्रियाए महतावपूर्ण है अर्थात अनुसंधान एक वयवस्थित तथा सुयोजिनित प्रक्रिया है अर्थात अनुसंधान एक वयवस्थित तथा सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान मै व्रधी की जाती है| शोध कार्यो से मानवीय तनवो को भी कम किया जाता है| व्यगनिक समस्याओ के समाधान की यह एक प्रभावशाली विधि है क्योकि अनुसंधान मै किसी समस्या का वज्ञानिक अन्वेषन सम्मिलित है अन्वेषन की क्रिया इस बात का धोतक है की समस्या को अति निकट से देखा जाय इसकी जांच पड़ताल की जाए और इसका ज्ञान प्राप्त किया जाय |

अनुसंधान की प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण का तत्व प्रमुख है | वैज्ञानिक निरीक्षण सदैव क्रमबद्ध एवं सुनियोजित होता है | अनुसंधान में भी नैसा ही निरीक्षण आता है | अनुसंधान में नवीन तथ्यों की खोज के जाती है | तथा नवीन सत्यों का प्रतिपादन किया जाता है| शोधकार्य द्वारा प्राचीन प्रत्तय तथा तथ्यों का नवीन अर्थापन किया जाता है |

शोध की वैज्ञानिक विधियों में विज्ञान का अध्ययन आवशयक है | वर्तमान युग विज्ञान का है | किन्तु समाज की पृष्ठभूमि देखने से ज्ञात होता है की सामाजिक युग व्यवहार का युग है | इसके पश्चात धर्म है | धर्म के नाम पर समाज में अनेक कुरीतियों ने जन्म लिया किन्तु मनुष्य के ज्ञान के बढ़ने के साथ साथ विज्ञान का युग आया | मध्यकाल में तर्कों के स्थान पर विश्वासों को अधिक महत्व दिया जाता था | किन्तु वर्तमान युग में तर्क ने विश्वास का स्थान ले लिया है| विज्ञान के कारण मनुष्ट ने प्राकृतिक घटनाओं पर नियंत्रण कर लिया है | और अनेक परिवर्तन किए हैं किन्तु इसी के साथ विभिन्न प्रकार की जटिल ओर गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही है | सामाजिक वैज्ञानिकों का मत है की इन समस्याओं को हल किया जा सकता है यदि सामाजिक अनसंधान में निष्पक्ष तथा व्यस्विस्थत रूप से अवलोकन किया जाये |

www.ignited.in

वैज्ञानिक पध्दति की विशेषताएँ : -

सत्यापनशीलता - वैज्ञानिक विधि द्वारा निकाले गए निष्कर्ष सदैव एक से ही रहते हैं | बार बार परीक्षण करने पर भी परिणाम समान ही रहते है |

निश्चयात्मकता वैज्ञानिक विधि निश्चित विशिष्ट तथा स्पष्ट होती है इसमें कोई भी व्यक्ति जब चाहे तब अच्छी तरह से समझ सकता है | इस में आवशयकता इस बात की होती है कि अनुसंधान में प्रयुक्त होने वाले सभी तत्वों की एसपीएसएचटी व्याख्या हो जिनकों अच्छी तरह समझा सके ओर दोहराया भी जा सके|

वैषयिकता --- वैषयिकता भी वैज्ञानिक पध्दति की एक विशेषता है| जब किसी धारणा का अध्ययन उसके सच्चे रूप में होता है , तथा वह अध्ययन कर्ता के निजी विचारों से अप्रभावित रहता है तो हम उसे विषय प्रधान कहते हैं|

वैषयिकता देखने में जितनी सरल प्रतीत होती है व्यववहारिक रूप में उतनी ही कठिन है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का अपना अपना दृष्टिकोण होता है| जिसके कारण उसके विचार तथा संस्कार अवलोकन शक्ति को प्रभावित होते है|

समान्यता - प्रयह यह माना जाता है कि किसी भी प्रकार का अनुसंधान क्यो न हो वह सभी के उपर लागू होना चाहिए और यह तभी संभव है जब समस्या से संबन्धित निष्कर्ष वैज्ञानिक आधार पर निकले ज़े हो

क्षमता – वैज्ञानिक विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष मै पूर्वानुमान किए जाने कि क्षमता होती है यदपि किसी निष्कर्ष को देखकर भविष्य के लिए कुछ भी नहीं कहा जा सकता क्योकि किसी चीज का जो रूप आज हाईऊ वह कल दूसरा हो सकल्टा है |अतः किसी प्रकार कि पूर्व धारणा नहीं बनाई जा सकती क्योकों संसार गतिमान है उसकी परिस्थितिया सदेव बदलती रहती है | फिर भी वज्ञानिक प्रक्रति द्वारा प्राप्त निष्कर्षो के संबंधो मै भविष्यवाणी कि जा सकती है परंतु यह निष्कर्ष कार्य कारण के नियम पर आधारित होने चाहिए |

संदर्भ ग्रंथ सूची

सामाजिक अनुसंधान एवं सामाजिक सर्वेक्षण -----डॉ गोपी रमन प्रसाद सिंह

शेक्षिक अनुसंधान विधीय -----श्रीमति शशिकला सरीन ,एवं अंजनी सरीन

Corresponding Author

Bandana Mishra*

Research Scholar, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore, Madhya Pradesh

www.ignited.in